Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-4, No.I I, Aug.-2017, pp.Hin.-31-34

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 सुरेन्द्र सिंह, सहायक प्रोफेसर,
शिक्षा एवं शोध विभाग, हिन्दू कालेज, मुरादाबाद, उ.प्र. भारत।
श्री नरेश कुमार, शोधार्थी,
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़ गड़, राजस्थान, भारत।

जब से मानव अस्तित्व में आया तभी से उसने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग प्रारम्भ कर दिया था। धीरे–धीरे मनुष्य का बौद्धिक विकास हुआ, उसकी आबादी बढ़ी, उसकी संस्कृति और प्रौद्योगिकी का विकास किया, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक उपयोग किया गया इसका परिणाम यह हुआ कि अत्यधिक प्रदूषक पदार्थ हुये जो धीरे–धीरे वातावरण में मिलते गये । इन प्रदूषित पदार्थों के कारण जैविक चक्र का संतुलन बिगड़ गया जो आज पर्यावरणीय संकट के रूप में समाने खड़ा है। इससे मानव ही नहीं अपितु संम्पूर्ण धरती के जीवों का जीवन संकटग्रस्त है। वस्तुतः किसी भी वस्तु के कार्य एवं व्यवहार में उसका मूल्य प्रतिबिम्बित होता है तथा होना भी चाहिए यथा अग्नि के कार्य एवं व्यवहार में उष्णता तथा जल के कार्य एवं व्यवहार में शीतलता परिलक्षित होनी चाहिए। यदि यह गुण अथवा प्रभाव विशेष उत्पन नहीं होते हैं तो इन्हें क्रमशः अग्नि और जल नहीं कहा जा सकता। अतः वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप का बोध मूल्य के माध्यम से कराती है। दर्शन का एक विचारणीय क्षेत्र मूल्य मीमांसा है यदि हम इसके विषय में सोचना बन्द कर दें हममें से अधिकांश लोग यह मानेंगे कि एक क्षेत्र तो सत्ता का है और दूसरा क्षेत्र मूल्य का है हमारे अनुभव में आने वाली वस्तुओं का सत्ता सम्बन्धी पक्ष महत्वपूर्ण है किन्तु हमारा अधिकांश अनुभव इन वस्तुओं से संयुक्त मूल्य से बना हुआ होता है। बच्चों की चेतना का उन्नयन तथा उसमें अपेक्षित संशोधन, परिवर्तन तभी सम्भव है, जब छात्र आधारित शिक्षा हो। हमारे देश में तो गुरु की विद्या का महत्व तब होता है, जब शिष्य गुरु से अधिक प्रतिभाशाली निकले। शिक्षा व्यवस्थापकों में दृढ़ इच्छा शक्ति हो, शिक्षकों में शिक्षण की उत्कट अभिलाषा हो। अतः शोधकर्ता ने यह महसूस किया है कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों विद्यार्थियों को अधिक से अधिक मूल्य शिक्षा प्रदान की जाए जिससे उनके अन्दर मूल्यों का विकास किया जाये। इसलिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया है।

मुख्य शब्द– सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय, गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय, मूल्य।

आवश्यकता एवं महत्व –

विश्व में प्रत्येक देश अपनी संस्कृति, परम्पराओं, जीवन मूल्यों, ज्ञान–विज्ञान एवं महापुरुषों के अनुभवों को राष्ट्रीय थाती के रूप में भावी पीढ़ी को शिक्षा के माध्यम से सौंपने का प्रयास करता है। भारत की महान् आध्यत्मिक संस्कृति, श्रेष्ठ परम्पराएँ, जीवन मूल्यों, महापुरुषों के आदर्श जीवन–चरित्र तथा यहाँ का ज्ञान–विज्ञान इस देश ही नहीं, अपितु विश्व की अमूल्य निधि माने जाते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति द्वारा अपनी इस अप्रतिम राष्ट्रीय निधि का भावी पीढ़ी को सौंपना अति आवश्यक है। विदेशी संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति से युवा पीढ़ी को बचाना होगा। यदि हमारे छात्रों को अपनी महान् उज्ज्वल संस्कृति, गौरवपूर्ण इतिहास, महापुरुषों के जीवन–चरित्र, श्रेष्ठ राष्ट्रीय परम्पराओं का परिचय आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के साथ कराया जाये जो आज के निराशापूर्ण वातावरण में भी आशा की किरण उत्पन्न होकर विद्यार्थी जगत में अपेक्षित परिवर्तन दिखाई देगा।

आज की आपाधापी में प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुकूल कार्यो एवं निर्णयों पर ही जोर देता है, उसे अन्य व्यक्तियों की सुख–सुविधाओं से कुछ भी लेना देना नहीं है। जहाँ उसे स्वयं का लाभ दिखता है वहाँ वह कुछ भी करने को तैयार रहता है। ऐसे में उसे मूल्यों की कोई परवाह नहीं रहती इसका प्रभाव ही युवा पीढ़ी पर पढ़ता है। छात्र के जीवन में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों के द्वारा ही वह अपनी तथा राष्ट्र की उन्नति में सहयोगी बन सकता है। आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो छात्रों में उच्च मूल्यों का विकास करें और उन्हें समाज एवं देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाले गुणों से परिपूर्ण बनाए।

शिक्षा में निम्नलिखित शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों पर प्रकाश डाला है। जिसमें अग्रवाल के0 (1959)ए एण्डरेस (1966), एस0

Scanned by CamScanner

कालिया (1972), निंहर (1973), कटियार वी0सी0 (1980), दीप्ती कु0 (2002), यादव रेनू (2005), तिवारी (2006), सक्सेना आर0 (2010), भारती गीता (2015) प्रमुख हैं।

समस्या कथन– सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

शब्दों का परिभाषीकरण –

सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय– इन विद्यालयों से आशय ऐसे विद्यालयों से है जो राज्य सरकार द्वारा पूर्ण रूप से संचालित हैं।

गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय– इन विद्यालयों से आशय ऐसे विद्यालयों से है जो राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं परन्तु इनमें रख–रखाव, शिक्षण, सहायक शिक्षण समग्री, अध्यापक का वेतन व अन्य खर्च विद्यार्थियों द्वारा दिये गये शिक्षण शुल्क से प्राप्त किया जाता है।

मूल्य– मूल्य शब्द अंग्रेजी का शब्द Value लैटिन भाषा के Valere शब्द से निकला बताया जाता है, जिसका अर्थ है– किसी चीज की कीमत, गुण, विशेषता, उपयोगिता। मूल्य मानवोचित सद्गुणों, नैतिक आचार संहिता के तत्व होते हैं।

"मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत इच्छाएँ और लक्ष्य होते हैं, जिन्हें कण्डीशनिंग, सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया से आत्मसात् किया जाता है और जो व्यक्ति की अपनी पसन्दें, मानक और महत्वाकांक्षाएँ बन जाते है।"

शोध विधि:–वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण:–मूल्य विकास प्रश्नावली: डा0 परमानन्द सिंह एवं डा0 लाल धारी यादव द्वारा निर्मित

चर – स्वतन्त्र चर– विद्यार्थी

आश्रित चर– मूल्य

शोध के उद्देश्य –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी विद्यालय केविद्यार्थी	300	28.90	11.41	2.40	सार्थक	सार्थक नही
गैर सरकारी विद्यालय केविद्यार्थी	300	31.28	12.78			

सारणी–1 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 28.90 एवं मानक विचलन 11.41 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 31.28 मानक विचलन 12.78 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात संख्या 2.40 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात 0.01 पर सार्थक है परन्तु 0.05 पर सार्थक नहीं है। इससे आशय है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में मूल्यों की संख्या गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से कम होती है। क्योंकि गैर सरकारी विद्यालयों में आर्थिक व सामाजिक रूप से सक्षम परिवारों के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इन विद्यार्थियों के परिवार शिक्षित सुसंस्कृत होते हैं। परिवार का पालन पोषण, संस्कार, आदर्श आदि विशेषताओं के माध्य से बालक के अन्दर मूल्यों का विकास किया जाता है। जबकि सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले बालक अशिक्षित व गरीब परिवारों से आते हैं। अशिक्षित व गरीब परिवार रोजी–रोटी कमाने के कारण अपने बच्चों के अन्दर पूर्ण रूप से मूल्यों का विकास नहीं कर पाते हैं। जिस कारण गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में मूल्य कम होते हैं।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार हमारी परिकल्पना क्रमांक 1 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–2

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों में मध्यमान, मध्यमान विचलन, क्रान्ति अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी उ0प्र0 विद्यालय के छात्र	300	20.12	7.13	3.00	सार्थक	सार्थक नहीं
गैर सरकारी उ0प्र0 विद्यालय के छात्र	300	18.41	7.16			

सारणी–2 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 20.12 एवं मानक विचलन 7.13 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 18.41 मानक विचलन 7.16 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात 3.00 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन के अनुसार सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना क्रमांक–2 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्य–3

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी विद्यालय की छात्रायें	300	48.58	11.28	5.59	सार्थक	सार्थक
गैर सरकारी विद्यालय की छात्रायें	300	53.70	11.14			

तालिका संख्या–3 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्रायें का मध्यमान 48.58 एवं मानक विचलन 11.28 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाली छात्रायें का मध्यमान 53.70 मानक विचलन 11.14 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात संख्या 5.59 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात 0.01 एवं 0.05 पर भी सार्थक है इससे आशय है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना क्रमांक 3 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या– 4

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी उ0प्र0वि0 के ग्रामीण विद्यार्थी	300	23.22	7.91	2.59	सार्थक	सार्थक
गैर सरकारी उ0प्र0वि0 के ग्रामीण विद्यार्थी	300	18.70	8.83			

तालिका संख्या–4 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 23.22 एवं मानक विचलन 7.91 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाले गामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 18.70 मानक विचलन 8.83 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात 2.59 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन के अनुसार सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना क्रमांक–4 स्वीकार की जाती है।

शोध के निष्कर्ष –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौबे, सरयू प्रसाद, मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. जायसवाल, सीताराम, शिक्षा विज्ञान कोष, अग्रवाल प्रकाशन मेरठ।

Scanned by CamScanner

ISSN 2348-3067

3. ढौढ़ियाल, सच्चिदानन्द तथा पाठक अरविन्द, शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. तिवारी, आदित्य नारायण, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल प्रकाशन मेरठ।
5. पाठक, पी0डी0, मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. राय, पारसनाथ (1981), अनुसन्धान परिचय, चतुर्थ संस्करण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
7. श्रीवास्तव, डी0एन0, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, साहित्य प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा।
8. शर्मा, डा0 आर0ए0, शिक्षण अधिगम में नवीन परिवर्तन, सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।
9. वर्मा, डॉ0 रामपाल सिह व प्रो0 पृथ्वी सिंह, विद्यालय प्रबन्धन एवं शिक्षा की समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. वशिष्ठ, डॉ0 के0के0, विद्यालय संठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्याएं लायल बुक डिपो, मेरठ।
11. सिंह, प्रसाद, मनोविज्ञान और शैक्षिक सांख्यिकी के मूल आधार।
12. सुखिया, एस0पी0 एवं मल्होत्रा, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व।

Scanned by CamScanner